पद २६६ (रागः खमाज – तालः धुमाळी) तकड् धिंऽतकड् मृदंग बजावे। नाचत गोपीबाला रे।।धु.।। भक्तनकु तारे कंसनकु मारे। राज दिये उग्रसेना रे। यवनके खातर

द्वारका बसाये। अंत नहीं अस्माना रे ।।१।। पांडव के कैवारी कौरवको संहारी। असुरासुरमर्दना रे। यवनकु लेकर मुचकुंद विवरमें भस्म जिये दुर्जना रे।।२।।भक्ततनका प्रेम देखे घननील

विवरमें भस्म जिये दुर्जना रे ।।२।।भक्ततनका प्रेम देखे घननील सुदामनगरीका सोना रे । दास मानिक कहे मधुसूदन जस दिया अर्जुना रे ।।३।।